9 वर्षा बहार

वर्षा बहार सबके, मन को लुभा रही है
नभ में छटा अनूठी, घनघोर छा रही है।

बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं
पानी बरस रहा है, झरने भी बह रहे हैं।

चलती हवा है ठण्डी, हिलती हैं डालियाँ सब
बागों में गीत सुन्दर, गाती है मालिनें अब।

तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते,
फिरते लखो पपीहे, हैं ग्रीष्म ताप खोते।

करते हैं नृत्य वन में, देखो ये मोर सारे,
मेढक लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे।

खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है,
बागों में खूब सुख से, आमोद छा रहा है।

चलते कतार बाँधे, देखो ये हंस सुन्दर,
गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहर।

इस भाँति है अनोखी, वर्षा बहार भू पर,
सारे जगत की शोभा, निर्भर है इसके ऊपर।

–मुकुटधर पाण्डेय

शब्दार्थ

अनूठी– अनोखी **आमोद**– खुशी **अति**– बहुत **लखो**– देखो
भू– भूमि, धरती **सौरभ**– सुगंध **मनहर**–मन को हरने वाले

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. प्रस्तुत कविता के आधार पर वर्षा ऋतु का वर्णन कीजिए।
2. वर्षा ऋतु में बाग-बगीचों में आनंद क्यों छा जाता है?
3. **निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए–**
   (क) खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है।
   (ख) गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहर।

पाठ से आगे

1. अपने अनुभव के आधार पर वर्षा ऋतु का वर्णन कीजिए।
2. ग्रीष्म ऋतु के बाद वर्षा ऋतु आती है। वर्षा ऋतु के आने पर आप कैसा महसूस करते हैं?
3. वर्षा के जल से क्या-क्या लाभ है?
4. वर्षा के जल को किन-किन तरीकों से संग्रहित किया जाता है?
5. यहाँ कविता की प्रथम पंक्ति के आधार पर अन्य तीन पंक्तियों की रचना स्वयं कीजिए–
   बादल बरसे, नाचे मोर
   .....
   .....
   .....

व्याकरण

1. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए–**
   सुख, प्रसन्न, सुन्दर, ठण्डी

गतिविधि

1. वर्षा ऋतु में आपके घर एवं गाँव की स्थिति कैसी हो जाती है? अपने अनुभवों के आधार पर लिखिए।

WEBCOPY